

प्रारंभिक परीक्षा

RBI ने अमेरिकी ट्रेजरी प्रतिभूतियों में अपनी होल्डिंग घटाई

संदर्भ

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने अमेरिकी ट्रेजरी बिलों की अपनी होल्डिंग जून 2024 में 242 बिलियन डॉलर से घटाकर जून 2025 में लगभग 227 बिलियन डॉलर कर दी है।

ट्रेजरी बिल (T-BILLS) क्या हैं?

- ट्रेजरी बिल अल्पकालिक ऋण साधन हैं जो सरकार द्वारा अल्पकालिक दायित्वों को पूरा करने के लिए धन जुटाने हेतु जारी किए जाते हैं।
- परिपक्वता अवधि हमेशा 1 वर्ष से कम होती है।
 - भारत में जारी किए जाने वाले T-BILLS के प्रकार: 91-दिन, 182-दिन और 364-दिन।
- T-BILLS अंकित मूल्य पर छूट पर जारी किए जाते हैं तथा परिपक्वता पर सममूल्य/अंकित मूल्य पर भुनाए जाते हैं।
 - अंतर = निवेशक का रिटर्न (निहित ब्याज)।
 - वे कूपन/ब्याज भुगतान नहीं करते हैं।

केंद्रीय बैंक और सॉवरेन वेल्थ फंड अमेरिकी ट्रेजरी में निवेश क्यों करते हैं?

- सुरक्षा → नगण्य डिफॉल्ट जोखिम; अमेरिकी सरकार द्वारा समर्थित।
- तरलता → विश्व का सबसे बड़ा और सबसे गहरा बांड बाजार (~26 ट्रिलियन डॉलर का बाजार)।
- आरक्षित मुद्रा की भूमिका → वैश्विक भंडार का ~60% अमेरिकी डॉलर में रखा जाता है (IMF, 2024)।
- संकट बफर → भुगतान संतुलन या मुद्रा स्थिरिकरण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इसे तुरंत समाप्त किया जा सकता है।
- बेंचमार्क भूमिका → अमेरिकी ट्रेजरी वैश्विक वित्त के लिए "जोखिम मुक्त दर" के रूप में कार्य करती है।
- अमेरिकी ट्रेजरी में प्रमुख निवेशक: (1) जापान: \$1,147 बिलियन (सबसे बड़ा धारक), (2) यूके (3) चीन।
 - भारत: 227 बिलियन डॉलर (10वां सबसे बड़ा)।

क्या अमेरिका, RBI द्वारा धारित ट्रेजरी प्रतिभूतियों तक पहुँच को रोक सकता है या प्रतिबंधित कर सकता है?

- अमेरिकी ट्रेजरी विभाग के विदेशी संपत्ति नियंत्रण कार्यालय (OFAC) के पास प्रतिबंध लगाए जाने पर अमेरिकी वित्तीय परिसंपत्तियों से जुड़े लेनदेन को अवरुद्ध, स्थिर या प्रतिबंधित करने की शक्ति है।
- यदि अमेरिकी सरकार चाहे, तो वह भारतीय रिज़र्व बैंक की इन प्रतिभूतियों तक पहुँच को प्रतिबंधित कर सकती है (उदाहरण के लिए, बिक्री पर रोक लगाना, कूपन भुगतानों को रोकना, या लेनदेन को रोकना)।
- उदाहरण: रूस (2022) - यूक्रेन पर आक्रमण के बाद, अमेरिका और उसके सहयोगियों ने विदेशों में रखे रूस के लगभग 300 बिलियन डॉलर के विदेशी मुद्रा भंडार (अमेरिकी ट्रेजरी सहित) को फ्रीज कर दिया।

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार -

- कुल रिज़र्व: 694.23 बिलियन अमेरिकी डॉलर।
- भारत के विदेशी मुद्रा भंडार के प्रमुख घटक:

- **विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियाँ (FCA):** भारत के विदेशी मुद्रा भंडार का सबसे बड़ा घटक। इसमें अमेरिकी डॉलर, यूरो और ब्रिटिश पाउंड जैसी मुद्राएँ शामिल हैं।
- **स्वर्ण भंडार:** मुद्रास्फीति के विरुद्ध बचाव के रूप में कार्य करता है तथा संकट के दौरान सुरक्षा प्रदान करता है।
- **विशेष आहरण अधिकार (SDR):** 1969 में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) द्वारा निर्मित एक अंतर्राष्ट्रीय आरक्षित परिसंपत्ति।
 - ये कोई मुद्रा नहीं हैं, बल्कि IMF सदस्य देशों की स्वतंत्र रूप से प्रयोग योग्य मुद्राओं पर एक संभावित दावा हैं।
- **रिजर्व ट्रैन्च पोजीशन (RTP):** यह IMF के साथ किसी देश के कोटे का वह हिस्सा है जिसे वह बिना किसी शर्त या उधार व्यवस्था के प्राप्त कर सकता है।

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)



कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य

संदर्भ

हाल ही में दो शांति प्रयासों के बावजूद कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (DRC) में पुनः हिंसा देखी गई है।

हाल के शांति प्रयास क्या हैं?

- 27 जून: अमेरिका की मध्यस्थता में वाशिंगटन में रवांडा और DRC के बीच समझौता हुआ।
- 19 जुलाई: कतर की मध्यस्थता से दोहा में कांगो सरकार और एम23 विद्रोहियों के बीच युद्धविराम समझौता हुआ।

अमेरिका की दिलचस्पी क्यों है?

- DRC की विशाल खनिज संपदा तक पहुंच, जिसका मूल्य 24 ट्रिलियन डॉलर है, जिसमें शामिल हैं:
 - वैश्विक कोबाल्ट भंडार का 70%,
 - कोल्टन, तांबा, हीरे और सोने के प्रचुर भंडार।
- DRC के खनिज क्षेत्र में चीन के प्रभुत्व को कम करना।
- सुरक्षा, राजनीतिक और आर्थिक कारणों से स्थिरता सुनिश्चित करना।

कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (DRC) के बारे में -

- सीमावर्ती देश: अंगोला, जाम्बिया, तंजानिया, बुरुंडी, रवांडा, युगांडा, दक्षिण सूडान, मध्य अफ्रीकी गणराज्य और कांगो गणराज्य।
- यह अफ्रीका का दूसरा सबसे बड़ा देश है। (सबसे बड़ा - अल्जीरिया)।
- महत्वपूर्ण नदी: कांगो नदी - अफ्रीका की दूसरी सबसे लंबी नदी।
- इसकी राजधानी किंशासा, कांगो नदी पर स्थित है।

स्रोत: [द हिंदू](#)



अपतटीय जलभृत(Offshore Aquifers)

संदर्भ

अमेरिकी सरकार के एक जहाज द्वारा देश के उत्तर-पूर्वी तट पर समुद्र तल के नीचे गलती से मीठे पानी की खोज के लगभग 50 वर्ष बाद, अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिकों ने अटलांटिक महासागर के नीचे एक विशाल अपतटीय जलभृत की उपस्थिति की पुष्टि की है।

अपतटीय जलभृत क्या हैं?

- ये समुद्र तल के नीचे स्थित छिद्रयुक्त चट्टान या तलछट के पिंड हैं जो मीठे पानी का भंडारण करते हैं।
- अध्ययनों से अनुमान लगाया गया है कि वैश्विक तटों के नीचे 1 मिलियन घन किलोमीटर ताजा पानी मौजूद है - जो कि समस्त स्थलीय ताजे पानी का लगभग 10% है।
- वितरण: ऑस्ट्रेलिया, चीन, उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका में पहचाना गया, और अब अमेरिका के उत्तर-पूर्वी तट पर व्यवस्थित रूप से ड्रिलिंग की जाती है।
- निर्माण सिद्धांत:
 - हिमयुग फँसाव(Ice Age Entrapment) → जब समुद्र स्तर नीचा था तब मीठा पानी भूमिगत चला गया।
 - तटवर्ती संपर्क → भूमि जलभृतों से जुड़ा हुआ, वर्षा के माध्यम से पुनर्भरित।
- संरक्षण तंत्र: सघन मिट्टी की एक चट्टानी परत खारे पानी के साथ मिश्रण को रोकती है।

अपतटीय जलभृत महत्वपूर्ण क्यों हैं?

- जल सुरक्षा: ऐसे समय में जब 2023 की संयुक्त राष्ट्र रिपोर्ट में 2030 तक जल की मांग बनाम आपूर्ति में 40% अंतर की भविष्यवाणी की गई है, यह नए अप्रयुक्त भंडार के रूप में कार्य कर सकता है।
- जलवायु अनुकूलन: सूखे, वर्षा के बदलते पैटर्न और हिमनदों के पिघलने से होने वाली बाधाओं के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करना।
- रणनीतिक संसाधन: जिन देशों के पास इन संसाधनों तक पहुंच है, वे अति-शोषित भूमि जलभृतों और विलवणीकरण संयंत्रों पर निर्भरता कम कर सकते हैं।
- टिकाऊ क्षमता: यदि नवीकरणीय (भूमि जलभृतों द्वारा पोषित) हो, तो दीर्घकालिक मीठे पानी का स्रोत उपलब्ध हो सकता है।
- वैश्विक इक्विटी: सीमित मीठे पानी वाले तटीय और द्वीपीय देशों को लाभ हो सकता है।
- अनुसंधान मूल्य: पृथ्वी के जल विज्ञान चक्र और जलवायु इतिहास (जैसे, हिमयुग जल भंडारण) की समझ को बढ़ाता है।

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)

आइसोब्यूटेनॉल(Isobutanol)

संदर्भ

ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया (ARAI) डीजल में 10% आइसोब्यूटेनॉल के मिश्रण की संभावना तलाश रहा है।

आइसोब्यूटेनॉल ($C_4H_{10}O$) क्या है?

- रासायनिक प्रकृति: यह ज्वलनशील गुणों वाला एक अल्कोहलिक यौगिक है।
- उत्पादन: बायोमास (जैसे गन्ना, मक्का, कृषि अपशिष्ट) या पेट्रोलियम आधारित प्रक्रियाओं से उत्पादित किया जा सकता है।
- गुण:
 - स्वच्छ, रंगहीन द्रव जिसमें मीठी गंध होती है।
 - पानी से कम घनत्व वाला।
 - इसके वाष्प हवा से भारी होते हैं।
 - एथेनॉल की तुलना में अधिक ऊर्जा घनत्व वाला।
 - कम हाइड्रोस्कोपिक (हवा से नमी कम सोखता है), जिससे इसका परिवहन और भंडारण आसान हो जाता है।
 - मौजूदा ईंधन अवसंरचना (fuel infrastructure) के साथ अनुकूल।
- उपयोग:
 - जैव ईंधन के रूप में, पेट्रोल या डीजल के साथ मिश्रित।
 - पेंट, कोटिंग्स और रासायनिक उद्योगों में विलायक के रूप में।
 - विमानन ईंधन में उपयोग की संभावना।
- एथेनॉल पर लाभ:
 - डीजल और पेट्रोल के साथ उच्च सम्मिश्रण सहनशीलता।
 - उच्च ऊर्जा सामग्री के कारण बेहतर माइलेज प्रदान करता है।
 - इंजन और पाइपलाइनों के लिए कम संक्षारक।

स्रोत: [द हिंदू](#)

महामारियों की रोकथाम में गिद्धों की भूमिका

संदर्भ

भारत की गिद्ध संरक्षण के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना (2016-25) के पूरा होने के करीब होने के साथ, विशेषज्ञों का तर्क है कि अगले चरण में गिद्ध संरक्षण को वन हेल्थ ढांचे के तहत महामारी की तैयारी से जोड़ा जाना चाहिए।

महामारियों की रोकथाम में गिद्धों की भूमिका -

- **प्राकृतिक अपशिष्ट प्रबंधक:** गिद्ध पशुओं के शवों को खाते हैं, तथा रोगाणुओं (एंथ्रेक्स, रेबीज, बोटुलिज़्म) के फैलने से पहले ही उन्हें तेजी से साफ कर देते हैं।
 - गिद्धों के बिना, शव पड़े रहते हैं, जिससे जंगली कुत्ते और चूहे आकर्षित होते हैं, जो मनुष्यों में बीमारियां फैलाते हैं।
- **जूनोटिक फैलाव में बाधा:** शवों का निपटान करके, गिद्ध पशुओं और मनुष्यों के बीच रोग संचरण को रोकते हैं।
 - जूनोटिक प्रकोप (पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाली बीमारियाँ) का खतरा कम हो जाता है।
- **निगरानी भूमिका:** शवों के प्रति प्रथम प्रतिक्रियाकर्ता के रूप में गिद्धों को रोग निगरानी प्रणालियों में एकीकृत किया जा सकता है, जिससे प्रकोप की पूर्व चेतावनी मिल सके।
- **क्षेत्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य सुरक्षा:** मध्य एशियाई फ्लाईवे पर प्रवासी गिद्ध 30 से अधिक देशों के पारिस्थितिकी तंत्रों को जोड़ते हैं।
 - उनकी सुरक्षा करने से सीमापार रोग का जोखिम कम होता है, तथा क्षेत्रीय महामारी संबंधी तैयारियां मजबूत होती हैं।
- **लागत प्रभावी रोकथाम:** गिद्ध संरक्षण (सुरक्षित पशु चिकित्सा दवाएं, टेलीमेट्री, सामुदायिक प्रबंधन) में निवेश करना, महामारी से निपटने की तुलना में कहीं अधिक सस्ता है।

स्रोत: [द हिंदू](#)

बाल पोषण वैश्विक रिपोर्ट-2025

संदर्भ

यूनिसेफ द्वारा बाल पोषण रिपोर्ट 2025 जारी की गई।

रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष -

- **बढ़ता बचपन का मोटापा:**
 - 5 वर्ष से कम आयु के 5% बच्चे अधिक वजन वाले हैं।
 - 20% बच्चे और किशोर (5-19 वर्ष) अधिक वजन वाले हैं - जो 2000 के बाद से दोगुनी दर है।
- **मोटापा बनाम कुपोषण (2025):**
 - मोटापे की व्यापकता: 9.4%।
 - कम वजन का प्रचलन: स्कूली बच्चों और किशोरों में 9.2%।
- **क्षेत्रीय हॉटस्पॉट:**
 - 50% से अधिक प्रभावित बच्चे पूर्वी एशिया एवं प्रशांत, लैटिन अमेरिका एवं कैरिबियन तथा दक्षिण एशिया में रहते हैं।
 - दक्षिण एशिया में 5-19 वर्ष की आयु के लोगों में अधिक वजन की व्यापकता 2000 से पांच गुना बढ़ गई है।

प्रवृत्ति के प्रमुख चालक -

- **सस्ते अति-प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ (UPF):** मक्का, सोया, गेहूं जैसे अवयवों पर सब्सिडी के कारण UPF ताजे खाद्य पदार्थों की तुलना में सस्ते हो जाते हैं।
 - लंबी शेल्फ लाइफ → व्यापक उपलब्धता, विशेष रूप से कम आय वाले परिवारों के लिए।
- **आक्रामक विपणन:** डिजिटल और प्रभावशाली व्यक्ति द्वारा संचालित विज्ञापन, विषय-वस्तु और विज्ञापनों के बीच की रेखाओं को धुंधला कर देते हैं।
 - कमजोर नियमन बच्चों को लक्षित विपणन की अनुमति देते हैं।
- **नीतिगत कमियां:** केवल 7% देशों ने पैकेट के सामने पोषण लेबल अनिवार्य किया है।
 - केवल 8% कंपनियां स्वस्थ खाद्य पदार्थों को बढ़ावा देने के लिए सब्सिडी देती हैं।

प्रमुख सिफारिशें -

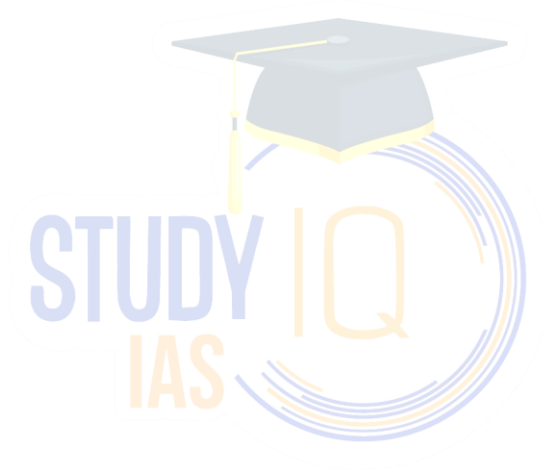
- **स्तनपान का समर्थन करना:** डिजिटल प्रतिबंधों सहित स्तन-दूध के विकल्प के विपणन की अंतर्राष्ट्रीय संहिता को लागू करना।
- **स्वास्थ्यवर्धक खाद्य वातावरण:** जंक फूड की उपलब्धता और विपणन को प्रतिबंधित करना।
 - अस्वास्थ्यकर उत्पादों पर कर लागू करना तथा पैक के सामने लेबलिंग अनिवार्य करना।
- **पौष्टिक खाद्य पदार्थों को बढ़ावा देना:** सब्सिडी को स्वस्थ खाद्य पदार्थों की ओर पुनर्निर्देशित करना।
 - पहुंच में सुधार के लिए स्थानीय खाद्य प्रणालियों को मजबूत करना।
- **सामाजिक सुरक्षा एवं जागरूकता:** निम्न आय वाले परिवारों को पौष्टिक आहार उपलब्ध कराने के लिए योजनाओं का विस्तार करना।
 - स्वस्थ भोजन की मांग को बढ़ाने के लिए व्यवहार परिवर्तन अभियान चलाना।

स्रोत: [हिंदू बिजनेसलाइन](#)

समाचार संक्षेप में

समुद्र प्रदक्षिणा	समाचार? रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने वर्चुअली “समुद्र प्रदक्षिणा” को हरी झंडी दिखाई। समुद्र प्रदक्षिणा क्या है? ● यह एक महिला त्रि-सेवा दल द्वारा किया गया वैश्विक जलयात्रा नौकायन अभियान है, जो विश्व में अपनी तरह का पहला अभियान है। ● प्रमुख विशेषताएँ: ○ अवधि: 9 महीने (सितंबर 2025 – मई 2026)। ○ मार्ग: पूर्वी दिशा में जलयात्रा, भूमध्य रेखा को दो बार पार करना और तीन महान अन्तरीपों - ल्यूविन (ऑस्ट्रेलिया), हॉर्न (चिली), गुड होप (दक्षिण अफ्रीका) का चक्कर लगाना। ○ दूरी: केवल पाल शक्ति के तहत ~ 26,000 समुद्री मील। ○ अनुपालन: विश्व नौकायन गति रिकॉर्ड परिषद के नियमों का पालन करना होगा (कोई नहर या संचालित परिवहन नहीं)। भारत में जलयात्रा की पृष्ठभूमि - ● वैश्विक अग्रदूत: ○ 1969: सर रॉबिन नॉक्स-जॉनस्टन (यूके) - पहली एकल बिना रुके जलयात्रा। ● भारतीय उपलब्धियाँ: ○ 2009-10: कैप्टन दिलीप डोंडे (सेवानिवृत्त) - किसी भारतीय द्वारा पहली एकल जलयात्रा। ○ 2012-13: कमांडर अभिलाष टॉमी (सेवानिवृत्त) - प्रथम भारतीय बिना रुके एकल जलयात्रा। ○ 2017-18: नविका सागर परिक्रमा (आईएनएसवी तारिणी) - भारतीय नौसेना की पहली महिला चालक दल परिक्रमा। ○ 2024-25: नाविका सागर परिक्रमा-II (आईएनएसवी तारिणी) - दो भारतीय महिला नौसेना अधिकारियों ने दो हाथों से परिक्रमा पूरी की। स्रोत: पीआईबी
फास्ट ट्रेक इमिग्रेशन - ट्रस्टेड ट्रेवलर प्रोग्राम (FTI-TTP)	समाचार? केंद्रीय गृह मंत्री ने लखनऊ, तिरुवनंतपुरम, त्रिची, कोझिकोड और अमृतसर हवाई अड्डों पर FTI-TTP का उद्घाटन किया। यह क्या है? ● अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों पर भारतीय नागरिकों और

	ओसीआई (विदेशी भारतीय नागरिक) कार्डधारकों के लिए निर्बाध, तेज और अधिक सुरक्षित आव्रजन मंजूरी प्रदान करने की पहल। ● कार्य: ○ पंजीकृत यात्री हवाई अड्डों पर स्वचालित ई-गेट का उपयोग करते हैं। ○ प्रक्रिया: बोर्डिंग पास + पासपोर्ट स्कैन करना → बायोमेट्रिक सत्यापन → गेट खुलेगा → ~30 सेकंड में आव्रजन मंजूरी। ○ इससे लम्बी कतारें और मैनुअल जांच की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। स्रोत: पीआईबी
--	---



समाचार में स्थान

चोलपोन-अता (किर्गिजस्तान)



समाचार? हाल ही में तियानजिन में हुए 25वें SCO शिखर सम्मेलन में किर्गिजस्तान के चोलपोन-अता शहर को 2025-2026 के लिए "SCO की पर्यटन और सांस्कृतिक राजधानी" नामित किया गया।

इसके बारे में -

- यह प्रथा 2012 में शुरू हुई जब SCO सदस्य देशों ने लोगों से लोगों के बीच संबंधों, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और पर्यटन सहयोग को मजबूत करने का निर्णय लिया।
- यूरोपीय संघ की "यूरोपीय संस्कृति की राजधानी" के समान है, जहां प्रत्येक वर्ष एक शहर अपनी सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित करता है।
- अतीत के उदाहरण:
 - 2022 → वाराणसी, भारत (यह उपाधि पाने वाला पहला भारतीय शहर)।
 - 2023 → चेल्याबिंस्क, रूस।
 - 2024 → अल्माटी, कजाकिस्तान।

किर्गिजस्तान के बारे में -

- राजधानी: बिश्केक
- अवस्थिति: मध्य एशिया में स्थलरुद्ध देश
- सीमाएँ: कजाकिस्तान (उत्तर), उज्बेकिस्तान (पश्चिम), ताजिकिस्तान (दक्षिण), चीन (पूर्व)।
- भूभाग: पहाड़ी (90% से अधिक भूमि पहाड़ है) → तियान शान पर्वतमाला का हिस्सा।
- प्रमुख झील: इस्सिक-कुल झील (विश्व की सबसे बड़ी अल्पाइन झीलों में से एक, जो कभी नहीं जमती)।
- पूर्व में रूसी साम्राज्य के अधीन (1876) → सोवियत संघ (1936 किर्गिज एसएसआर के रूप में)।
 - स्वतंत्रता: 31 अगस्त 1991 (सोवियत संघ के पतन के बाद)।

स्रोत: [SECTSCO](https://sect.sco.int)

दोहा

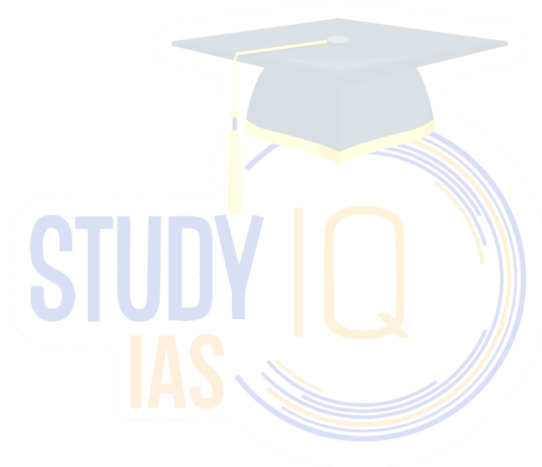


समाचार? प्रधानमंत्री ने दोहा में हुए हमलों पर गंभीर चिंता व्यक्त की और संप्रभुता के उल्लंघन की कड़ी निंदा की।

इसके बारे में -

- कतर की राजधानी और सबसे बड़ा शहर।
- यह अरब प्रायद्वीप के पूर्वी तट पर फारस की खाड़ी के किनारे स्थित है।
- फीफा विश्व कप 2022, एशियाई खेल 2006 की मेजबानी की, और 2030 में फिर से मेजबानी करेगा।

स्रोत: [पीआईबी](#)



मुख्य परीक्षा

भारत-EAEU संबंध: यूरोशियन क्षेत्र में अवसर और चुनौतियाँ

संदर्भ

भारत और रूस के नेतृत्व वाले यूरोशियन आर्थिक संघ (EAEU) ने मुक्त व्यापार समझौते (FTA) के लिए वार्ता शुरू करने हेतु रूपरेखा को अंतिम रूप दे दिया है।

यूरोशियन आर्थिक संघ (EAEU) के बारे में -

- **स्थापना: 2015**
- **सदस्य: रूस, बेलारूस, कजाकिस्तान, आर्मेनिया, किर्गिस्तान।**
- **सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था: रूस-ब्लॉक के व्यापार का 92% से अधिक हिस्सा इसका है।**
- **मौजूदा FTA: चीन, ईरान, वियतनाम, सर्बिया।**
- **उद्देश्य: वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी और श्रम की मुक्त आवाजाही; समन्वित आर्थिक नीतियाँ।**

भारत-EAEU व्यापार की वर्तमान स्थिति -

- **द्विपक्षीय व्यापार (भारत-रूस):**
 - **2024-25: \$68.7 बिलियन (महामारी-पूर्व की तुलना में 5.5 गुना अधिक)।**
 - **निर्यात: 4.88 बिलियन डॉलर।**
 - **आयात: 63.84 बिलियन डॉलर (मुख्यतः रियायती कच्चा तेल)।**
 - **रूस से भारत का तेल आयात: कुल कच्चे तेल आयात का लगभग 20%।**
- **भारत-EAEU समग्र (वित्त वर्ष 2025):**
 - **निर्यात: 5.5 बिलियन डॉलर (मुख्यतः रूस-केंद्रित)।**
 - **आयात: 64 बिलियन डॉलर (तेल का प्रभुत्व)।**
 - **ब्लॉक के भीतर प्रमुख व्यापार साझेदार: आर्मेनिया (\$264 मिलियन निर्यात), कजाकिस्तान (\$263 मिलियन), किर्गिस्तान (\$46 मिलियन), बेलारूस (\$53 मिलियन)।**
- **व्यापार संरचना: तेल आयात पर भारी, विविध निर्यात पर हल्का।**

EAEU में भारत के लिए अवसर -

- **निर्यात बाजारों का विविधीकरण: अमेरिका और यूरोपीय संघ के बाजारों में सख्ती (उच्च टैरिफ, प्रतिबंधों का दबाव) के कारण, EAEU नए गंतव्यों की पेशकश करता है।**
 - **निर्यात क्षमता वाले क्षेत्र:**
 - **फार्मास्यूटिकल्स एवं चिकित्सा उपकरण (भारत को लागत में काफी लाभ है)।**
 - **कृषि एवं समुद्री उत्पाद (मछली, मसाले, चावल)।**
 - **इंजीनियरिंग सामान, प्लास्टिक, रबर, ऑटो घटक।**
 - **वस्त्र एवं परिधान।**

SIGNIFICANCE FOR INDIA

ENERGY SECURITY

Protects India from volatility in Middle East supply chains.

STRATEGIC DEPTH

Expands India's footprint in Eurasia, a region otherwise dominated by China

ECONOMIC RESILIENCE

Provides insurance against Western sanctions and tariff barriers

NEIGHBOURHOOD FIRST EXTENSION

Strengthens India's outreach to Central Asia and reinforces ties with Iran (via INSTC)

GLOBAL SOUTH LEADERSHIP

Positions India as a power that can engage both Western and non-Western blocs

- **ऊर्जा सुरक्षा और मूल्य स्थिरता:** रूस पहले से ही भारत के कच्चे तेल के आयात का लगभग 20% रियायती कीमतों पर आपूर्ति करता है।
 - FTA दीर्घकालिक ऊर्जा सहयोग को संस्थागत बना सकता है, जिससे मध्य पूर्व की अस्थिरता के प्रति संवेदनशीलता कम हो सकती है।
 - गैस, कोयला और परमाणु ऊर्जा सहयोग में विस्तार की संभावना।
- **मध्य एशिया तक पहुंच:** EAEU के सदस्य (कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, आर्मेनिया) भारत को मध्य एशिया तक पहुंच का प्रवेश द्वार प्रदान करते हैं।
- **कनेक्टिविटी और व्यापार गलियारे:** अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC) के चालू हो जाने पर भारत और रूस के बीच लागत में 30-40% की कमी आएगी और समय में 20 दिन की कमी आएगी।
 - इसके अलावा व्लादिवोस्तोक-चेन्नई समुद्री मार्ग हिन्द-प्रशांत-आर्कटिक संपर्कों को खोलता है।
- **सामरिक स्वायत्तता को मजबूत करना:** EAEU के साथ व्यापार को गहरा करने से पश्चिम से परे भारत की साझेदारियों में विविधता आएगी।
 - यह भारत की बहुध्रुवीय विदेश नीति को मजबूत करता है, जिससे उसे अमेरिका, यूरोपीय संघ और रूस के साथ संबंधों को एक साथ संतुलित करने में मदद मिलती है।
 - प्रतिस्पर्धी ब्लॉकों के बीच कार्य करने की क्षमता प्रदर्शित करके वैश्विक दक्षिण में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका भी बढ़ेगी।
- **औद्योगिक एवं प्रौद्योगिकी सहयोग:** संभावित संयुक्त उद्यम:
 - रक्षा विनिर्माण (जैसे, पनडुब्बी, हेलीकॉप्टर, स्पेयर पार्ट्स)।
 - अंतरिक्ष सहयोग (भारत का इसरो + रूस का रोस्कोस्मोस)।
 - एआई, डिजिटल व्यापार और फिनटेक सहयोग (SCO के एआई रोडमैप पर आधारित)।
- **भारतीय एसएमई और किसानों को बढ़ावा:** परिधान, चमड़ा, हस्तशिल्प, कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य क्षेत्र के एसएमई को टैरिफ में कमी के कारण नए बाजार मिल सकते हैं।

चुनौतियां -

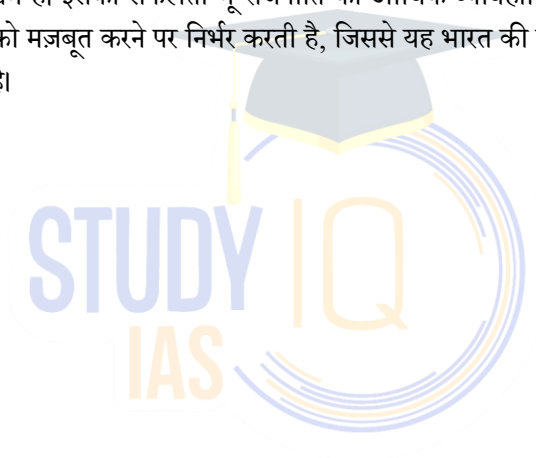
- **भू-राजनीतिक जोखिम:** रूस पर पश्चिमी प्रतिबंधों से बैंकिंग, लॉजिस्टिक और भुगतान प्रक्रिया जटिल हो गई है। रूस के साथ बढ़ते व्यापार से अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ भारत की रणनीतिक साझेदारी पर दबाव पड़ने का खतरा है।
- **व्यापार असंतुलन:** भारत का निर्यात विशाल तेल आयात की तुलना में छोटा बना हुआ है।
 - रूस के साथ 2024-25 व्यापार संतुलन: -58.9 बिलियन डॉलर। विविधीकरण के बिना, FTA विषमता को और गहरा कर सकता है।
- **लॉजिस्टिक और भुगतान बाधाएँ:** INSTC का कार्यान्वयन धीमा है और भू-राजनीतिक बाधाओं से ग्रस्त है। भुगतान तंत्र (वॉस्ट्रो खातों के माध्यम से रुपया-रुबल) प्रतिबंधों के कारण बाधाओं का सामना कर रहे हैं।
- **नाजुक राजनीतिक संदर्भ:** EAEU अर्थव्यवस्थाएं (बेलारूस, किर्गिस्तान, आर्मेनिया) राजनीतिक रूप से अस्थिर हैं, बाहरी प्रभाव के प्रति संवेदनशील हैं।
- **चीन के प्रभाव के साथ ओवरलैप:** रूस और मध्य एशिया चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) से गहराई से जुड़े हुए हैं। अगर चीन व्यापार गलियारों पर हावी हो जाता है, तो भारत के जूनियर पार्टनर बनने का खतरा है।

आगे की राह -

- **संतुलित कूटनीति:** रूस और पश्चिमी देशों के बीच समान दूरी बनाए रखना। भारत-अमेरिका-यूरोपीय संघ संबंधों को कमजोर किए बिना मुक्त व्यापार समझौते (FTA) को आर्थिक लाभ के रूप में इस्तेमाल करना।
- **व्यापार में विविधता लाना:** तेल पर निर्भरता कम करने के लिए फार्मा, आईटी, कपड़ा, कृषि और ऑटो घटकों में भारतीय निर्यात को बढ़ावा देना।
- **कनेक्टिविटी निवेश:** विश्वसनीय लॉजिस्टिक्स के लिए आईएनएसटीसी, चाबहार बंदरगाह और व्लादिवोस्तोक-चेन्नई मार्ग पर काम में तेजी लाना।
- **भुगतान प्रणालियों को मजबूत करना:** प्रतिबंधों से जुड़ी बाधाओं को दूर करने के लिए रुपया-आधारित निपटान और डिजिटल व्यापार प्लेटफार्मों का विस्तार करना।
- **क्षेत्रीय आउटरीच:** रूस-केंद्रित निर्भरता को कम करने के लिए कजाकिस्तान, आर्मेनिया, किर्गिस्तान, बेलारूस के साथ अधिक सक्रियता से जुड़ना।

प्रस्तावित भारत-EAEU मुक्त व्यापार समझौता (FTA) एक साहसिक दांव है। यह भारत को निर्यात में विविधता लाने, ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करने और अपनी यूरेशियाई उपस्थिति का विस्तार करने का अवसर प्रदान करता है, लेकिन व्यापार असंतुलन और पश्चिमी प्रतिरोध का भी जोखिम है। इसकी सफलता भू-राजनीति को आर्थिक व्यावहारिकता के साथ संतुलित करने, निर्यात को बढ़ावा देने और कनेक्टिविटी को मजबूत करने पर निर्भर करती है, जिससे यह भारत की बहुध्रुवीय व्यापार और ऊर्जा रणनीति का एक संभावित स्तंभ बन जाता है।

स्रोत: [मैगज़्टर](#)



भारत के मानसिक स्वास्थ्य संकट से निपटना

संदर्भ

टेली-मानस जैसी मानसिक स्वास्थ्य हेल्पलाइनों के उदय के बावजूद, भारत का आत्महत्या संकट गहरी प्रणालीगत कमियों को उजागर करता है, जिसके लिए तत्काल संकटकालीन देखभाल से परे एक समग्र, दीर्घकालिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

भारत में मानसिक स्वास्थ्य की वर्तमान स्थिति -

- **व्यापकता:** विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि लगभग 56 मिलियन भारतीय अवसाद से और 38 मिलियन चिंता विकारों से पीड़ित हैं।
- **आत्महत्या दर:** भारत की आत्महत्या दर 2022 में 12.4 प्रति लाख थी; कर्नाटक में यह दर 20.2 प्रति लाख थी, जो राष्ट्रीय औसत से कहीं अधिक थी।
- **कार्यबल की कमी:** प्रति 1,00,000 जनसंख्या पर केवल 0.75 मनोचिकित्सक, जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने प्रति 1,00,000 पर 3 मनोचिकित्सक की सिफारिश की है।
 - नैदानिक मनोवैज्ञानिकों, मनोरोग नर्सों और परामर्शदाताओं की भारी कमी।
- **राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB 2022) के अनुसार,** देश में 1.7 लाख आत्महत्याएं दर्ज की गईं।

बढ़ती आत्महत्याओं के पीछे के कारण -

- **मनोवैज्ञानिक कारक:**
 - अवसाद, चिंता, सिजोफ्रेनिया, मादक द्रव्यों का सेवन।
 - पिछले आत्महत्या के प्रयास या पारिवारिक इतिहास।
- **सामाजिक निर्धारक:**
 - गरीबी, बेरोजगारी, कर्ज।
 - लैंगिक असमानताएं और घरेलू हिंसा।
 - सामाजिक अलगाव, भेदभाव, जाति और पहचान आधारित तनाव।
- **शैक्षिक एवं व्यावसायिक तनाव:**
 - परीक्षा में असफलता, प्रतियोगी परीक्षाएं (NEET, UPSC, JEE)।
 - कार्यस्थल पर थकान और नौकरी की असुरक्षा।
- **जागरूकता का अभाव और कलंक:**
 - मानसिक बीमारी अभी भी कलंक है।
 - कई लोग आलोचना के डर से मनोचिकित्सकों से बचते हैं।

भारत में मानसिक स्वास्थ्य से निपटने की चुनौतियाँ -

- **मानव संसाधन घाटा:**
 - बहुत कम पेशेवर: प्रति 1 लाख लोगों पर केवल 0.75 मनोचिकित्सक (WHO 3 की सिफारिश करता है)।
 - असमान वितरण: अधिकांश विशेषज्ञ बड़े शहरों में हैं, ग्रामीण क्षेत्र उपेक्षित हैं।
 - सीमित प्रशिक्षण: कुछ ही संस्थान नैदानिक मनोविज्ञान या मनोरोग सामाजिक कार्य में उन्नत पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं।
- **बुनियादी ढांचा एवं संस्थागत अंतराल:**

- **प्राथमिक देखभाल की कमजोर कड़ी:** मानसिक स्वास्थ्य को बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल में शायद ही कभी एकीकृत किया जाता है।
- **पुनर्वास केन्द्रों की कमी:** विशेष रूप से गंभीर, दीर्घकालिक बीमारियों के लिए।
- **डिजिटल विभाजन:** टेली-मानस जैसी हेल्पलाइनें उन लोगों तक नहीं पहुंच पातीं जिनके पास फोन/इंटरनेट नहीं है।
- **भीड़भाड़ वाले अस्पताल:** सरकारी मनोरोग वार्डों में पर्याप्त बिस्तरों की कमी है।
- **वित्तीय बाधाएँ:**
 - **छोटा बजट:** मानसिक स्वास्थ्य को भारत के स्वास्थ्य बजट का 1% से भी कम मिलता है।
 - **महंगा उपचार:** निजी चिकित्सा की लागत प्रति सत्र 500-2000 रुपये है, जो कई लोगों के लिए वहन करने योग्य नहीं है।
 - **खराब बीमा:** मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम (2017) के बाद भी, कई पॉलिसियाँ मानसिक स्वास्थ्य कवरेज को बाहर करती हैं या सीमित करती हैं।
- **सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधाएँ:**
 - **कलंक:** मानसिक बीमारी को कमजोरी या "पागलपन" के रूप में देखा जाता है।
 - **न्याय का भय:** परिवार अक्सर समस्याओं को छिपाते हैं।
 - **लैंगिक पूर्वाग्रह:** महिलाओं के मुद्दों को "भावनात्मक" या "हार्मोनल" कहकर खारिज कर दिया जाता है।
 - **अनौपचारिक सहायता को प्राथमिकता:** लोग पेशेवरों की बजाय पारिवारिक या धार्मिक सलाह पर भरोसा करते हैं।
- **नीति एवं शासन चुनौतियाँ:**
 - **खराब कार्यान्वयन:** राष्ट्रीय और जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों को पर्याप्त धन नहीं मिल पाता।
 - **विखंडन:** केंद्र, राज्यों, गैर सरकारी संगठनों और हेल्पलाइनों के बीच कमजोर समन्वय।
 - **कमजोर निगरानी:** मानसिक बीमारी, आत्महत्या की प्रवृत्ति या परिणामों पर नज़र रखने के लिए कोई मजबूत प्रणाली नहीं।

सरकारी पहल -

- **राष्ट्रीय टेली-मानस हेल्पलाइन (2022):** 20 से ज़्यादा भाषाओं में 24x7 सहायता हेल्पलाइन, जो राज्य और जिला स्तर के मानसिक स्वास्थ्य केंद्रों से जुड़ी है। यह तत्काल सहायता और रेफरल सेवाएँ प्रदान करती है।
- **जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (डीएमएचपी):** राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (एनएमएचपी) के अंतर्गत शुरू किया गया। यह मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का सामुदायिक स्तर तक विस्तार करता है।
- **मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम, 2017:**
 - मानसिक स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच के अधिकार को मान्यता दी गई।
 - आत्महत्या के प्रयास को अपराध की श्रेणी से बाहर किया गया।
 - मानसिक बीमारी के लिए बीमा कवरेज अनिवार्य किया गया।
- **राज्य विशिष्ट पहल:**
 - **कर्नाटक की सुरक्षा परियोजना:** समुदाय आधारित आत्महत्या रोकथाम।
 - **केरल की जीवनरक्षा:** आत्मघाती संकेतों को पहचानने के लिए प्रशिक्षित गेटकीपर।
 - **परीक्षा के तनाव से जूझ रहे छात्रों के लिए स्कूल/सामाजिक कल्याण हेल्पलाइनों के साथ तमिलनाडु टेली-मानस का एकीकरण।**

आगे की राह -

- **मानसिक स्वास्थ्य कार्यबल को मजबूत करना:** मनोचिकित्सा, नैदानिक मनोविज्ञान और मनोचिकित्सा नर्सिंग में सीटें बढ़ाना।
 - फेलोशिप और छात्रवृत्ति के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में पोस्टिंग को प्रोत्साहित करना।
- **बुनियादी ढाँचे और वित्तपोषण का विस्तार करना:** स्वास्थ्य बजट का कम से कम 5% मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवंटित करना। जिला अस्पतालों में मनोरोग वार्ड और पुनर्वास केंद्रों को सुदृढ़ करना।
- **सामुदायिक सहभागिता:** प्रारंभिक चेतावनी संकेतों की पहचान करने के लिए **गेटकीपर्स**(शिक्षकों, आशा कार्यकर्ताओं, स्थानीय नेताओं) को प्रशिक्षित करना। सहकर्मि सहायता समूहों और स्वयं सहायता नेटवर्क का विस्तार करना।
- **स्कूल और कॉलेज मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम:** नियमित परामर्श, तनाव प्रबंधन कार्यशालाएँ और जागरूकता अभियान। पाठ्यक्रम में मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा का एकीकरण।
- **सेवाओं का एकीकरण:** देखभाल की निरंतरता के लिए हेल्पलाइनों को अस्पतालों, गैर सरकारी संगठनों और पुनर्वास केंद्रों से जोड़ना।
- **सामाजिक निर्धारकों पर ध्यान देना:** गरीबी उन्मूलन, सामाजिक समावेशन नीतियाँ और लैंगिक न्याय के उपाय। कमजोर समूहों पर ध्यान केंद्रित करना: किसान, छात्र, महिलाएँ, LGBTQ+ और बुजुर्ग।
- **कलंक का मुकाबला:** मदद लेने को सामान्य बनाने के लिए राष्ट्रव्यापी जागरूकता अभियान। आत्महत्या की घटनाओं को सनसनीखेज बनाए बिना जिम्मेदारी से रिपोर्ट करने के लिए मीडिया दिशानिर्देश।

स्रोत: [द हिंदू](#)

भारत और फ्रांस की लोकतांत्रिक व्यवस्था के बीच तुलना

संदर्भ

हाल ही में, फ्रांस के प्रधानमंत्री फ्रांस्वा बायरू ने विश्वास मत हारने के बाद इस्तीफा दे दिया, जिससे देश एक नए राजनीतिक संकट में फंस गया।

विशेषता	भारत	फ्रांस
राज्य के प्रधान (अध्यक्ष)	- नियुक्ति: अप्रत्यक्ष रूप से एक निर्वाचक मंडल (संसद + राज्य विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य) द्वारा निर्वाचित। - शक्तियाँ: अधिकतर औपचारिक; वास्तविक कार्यकारी शक्ति प्रधानमंत्री के नेतृत्व वाली मंत्रिपरिषद के पास होती है। - अवधि: 5 वर्ष - निष्कासन: महाभियोग द्वारा (दोनों सदनों के विशेष बहुमत की आवश्यकता होती है)। - प्रकृति: नाममात्र कार्यकारी	- नियुक्ति: सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार (दो-चरण प्रणाली) द्वारा प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित। - शक्तियाँ: बहुत शक्तिशाली - कमांडर-इन-चीफ, नेशनल असेंबली को भंग कर सकता है, जनमत संग्रह करा सकता है, प्रधानमंत्री की नियुक्ति कर सकता है, मंत्रिपरिषद की अध्यक्षता कर सकता है। - अवधि: 5 वर्ष (मूलतः 7 वर्ष, 2000 में घटा दी गई)। - निष्कासन: कर्तव्यों का पालन न करने की स्थिति में उच्च न्यायालय के रूप में कार्यरत संसद द्वारा महाभियोग चलाया जा सकता है (दुर्लभ और कठिन)। - प्रकृति: वास्तविक कार्यकारी
सरकार के मुखिया (प्रधानमंत्री)	- नियुक्ति: लोकसभा में बहुमत दल/गठबंधन का नेता, <u>राष्ट्रपति द्वारा औपचारिक रूप से नियुक्त</u>। - शक्तियाँ: वास्तविक कार्यकारी प्राधिकार; मंत्रिमंडल की अध्यक्षता, लोकसभा के प्रति उत्तरदायी, प्रशासन और नीति पर नियंत्रण। - कार्यकाल: 5 वर्ष, लेकिन लोकसभा में बहुमत पर निर्भर करता है।	- नियुक्ति: <u>राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त</u>। नेशनल असेंबली में बहुमत प्राप्त होना आवश्यक है (अन्यथा "सहअस्तित्व/cohabitation" की स्थिति उत्पन्न होती है)। - शक्तियाँ: दैनिक सरकार चलाना, कानून प्रस्तुत करना, लेकिन यदि दोनों के बीच राजनीतिक तालमेल हो तो राष्ट्रपति के अधीन रहना। - कार्यकाल: निश्चित नहीं; नेशनल असेंबली + राष्ट्रपति के समर्थन पर निर्भर करता है।
विधान मंडल	- लोकसभा: प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित, 5 वर्ष (जब तक कि पहले भंग न कर दी जाए)। - राज्यसभा: अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित, स्थायी निकाय जिसका 1/3 भाग प्रत्येक 2 वर्ष में सेवानिवृत्त होता है। - शक्तियाँ: कानून बनाना, वित्त पर नियंत्रण रखना, सरकार को जवाबदेह बनाना। धन संबंधी मामलों में लोकसभा अधिक	- नेशनल असेंबली (निचला सदन): प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित, 5 वर्ष, राष्ट्रपति द्वारा भंग की जा सकती है। अधिक शक्ति रखती है। - सीनेट (उच्च सदन): स्थानीय प्रतिनिधियों द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित, 6 वर्ष (प्रत्येक 3 वर्ष में 1/2 का नवीनीकरण)। अधिक परामर्शदात्री, असेंबली से कमजोर।

	शक्तिशाली है।	
न्यायतंत्र	● संरचना: एकीकृत प्रणाली: सर्वोच्च न्यायालय (शीर्ष), उच्च न्यायालय, अधीनस्थ न्यायालय। ● नियुक्ति: कॉलेजियम की सिफारिश के बाद राष्ट्रपति द्वारा सुप्रीम कोर्ट/हाईकोर्ट के न्यायाधीशों की नियुक्ति। ● शक्तियां: न्यायिक समीक्षा की शक्ति के साथ स्वतंत्र न्यायपालिका (असंवैधानिक कानूनों को रद्द कर सकती है)। ● कार्यकाल: सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश 65 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त होते हैं, जबकि हाईकोर्ट के न्यायाधीश 62 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त होते हैं। ● निष्कासन: महाभियोग द्वारा (कठिन; संसद में विशेष बहुमत की आवश्यकता होती है)।	● संरचना: दोहरी प्रणाली: कोर्ट डी कैसेशन (सर्वोच्च दीवानी/दंड न्यायालय), कॉन्सिल डी'एटैट (सर्वोच्च प्रशासनिक न्यायालय)। संवैधानिक समीक्षा के लिए पृथक संवैधानिक परिषद। ● नियुक्ति: संवैधानिक परिषद के सदस्य आंशिक रूप से राष्ट्रपति, असेंबली अध्यक्ष, सीनेट अध्यक्ष द्वारा नियुक्त किए जाते हैं; साधारण न्यायालयों के न्यायाधीश कार्यपालिका द्वारा नियुक्त किए जाते हैं। ● शक्तियां: संवैधानिक परिषद कानूनों की संवैधानिकता की समीक्षा करती है (पूर्व-समीक्षा), लेकिन साधारण न्यायालय कानूनों को रद्द नहीं कर सकते (कोई व्यापक न्यायिक समीक्षा शक्तियां नहीं हैं)। ● कार्यकाल: संवैधानिक परिषद के सदस्य 9 वर्ष तक सेवा करते हैं (प्रत्येक 3 वर्ष में 1/3 का नवीनीकरण होता है)। ● निष्कासन: सामान्यतः निश्चित अवधि, आसानी से हटाया नहीं जा सकता।
चुनाव	● संचालन प्राधिकरण: भारत का चुनाव आयोग सभी चुनावों का पर्यवेक्षण करता है। ● लोकसभा के लिए एफ.पी.टी.पी. (फर्स्ट पास्ट द पोस्ट)।	● संचालन प्राधिकरण: आंतरिक मंत्रालय चुनाव आयोजित करता है; संवैधानिक परिषद राष्ट्रपति/असेंबली चुनाव और जनमत संग्रह का पर्यवेक्षण करती है। ● राष्ट्रपति और नेशनल असेंबली चुनावों के लिए दो-चरणीय प्रणाली।

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)